222 B
797
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1209
10121

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 797

Swadesh Mangalacharan in Hindi
3 copies

॥ वन्देमातरम् ॥

॥ स्वदेश मंगलाचार ॥

Govt of U.P.
Recd on 22.8.23

जिसको

स्वराज्य प्रचारक मंडल जलेसर ने पं० रामस्वरूप शर्म्मा (शर्म्मा जलेसरी) से तैयार कराके प्रकाशित कराया।

सुदर्शनलाल जैन के 'सुदर्शन प्रेस, हाथरस में
रामप्रसाद गुप्त के प्रबन्ध से छपा।

प्रथमवार
२०००

सर्वाधिकार स्वरक्षित हैं।

मूल्य -)

891.431
Sh23 SW
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 797
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ ओ३म् ॥

स्वदेश मंगलाचार ।

ईश्वर प्रार्थना नं० १

भारत की नाव भगवन जल्दी से पार करदो।
बिगड़े हुए दिनों का अब तो सुधार करदो ॥
खुद गर्जियां दिलों से इन के निकाल डालो।
आपिस की फूट के भी अब तार तार करदो ॥
भारत की वस्तुएँ अब प्यारी लगें दिलों को।
दिल में विदेशियों से पैदा गुबार करदो ॥
मेलो प्रेम से अब जीवन भी हम बितायें।
आनन्द मय हो भारत ऐसी बहार करदो ॥
दर्दे वतन हो दिल में सच्ची लगन लगी हो।
हंस २ वतन के ऊपर अब जां निसार करदो ॥
सामान अब विदेशी लेना हराम समझें।
यूरुप के ताजिरों को तुम बे करार करदो ॥
दो दिल की दुशमनी को दम में निकाल फेंको।
भारत निवासियों को तुम यार पार करदो ॥
हम पर गिरायें गोले श्रोले गिरेंगे उन पर।
जो हमको दो करें हैं तुम उनको चार करदो ॥
"शर्म्मा जलेसरी" की स्वीकार प्रार्थना हो।
देशी लगन लगादो अच्छे विचार करदो ॥

जौनार गारी नं० २

यह दुर दिन के हैं ठाट-सुनाऊं तोहि सुनि आली ॥टेक॥
ज्ञान सूर्य भयो अस्त अविद्या आन लगाई हाट।
लोलुप, लंपट—और कुचाली, भरते फिर सपाट ॥
बनें नित प्रति गाली—यह दुर दिन० ॥ १ ॥
वैदिक धर्म सत्त मारग तजि फिरते बारह बाट।
धोबी के कुत्ते की तरियां घर पर रहत न घाट ॥
छाय रही (हरे हरे) मतवाली—यह दुर दिन० ॥२॥
स्वारथ में फंस नौकर शाही बने पेट के भाट।
लूट लूट भोले भारत को खूब उडावें चाट ॥
आज भर भर थाली—यह दुर दिन के हैं० ॥ ३ ॥
मेल, एकता, सुख दाइन को उलट दियो है ठाट।
सौरत, भूमी के पुत्रों पर रही न टूटी खाट ॥
बरस रही (हरे हर) कंगाली—यह दुर दिन० ॥ ४ ॥
निज जननी भारत माता को फूटो हाय लिलाट।
पूत—कपूत भये अब पैदा पड़े बुद्धि पर पाट।
हंसें दे दे ताली—यह दुर दिन के हैं ठाट० ॥ ५ ॥
देश भक्त अरु सच्चे प्रेमी होते नहीं तिराट।
अभिमानी, स्वार्थी, बिदेशी लाख लगावें डाट ॥
करें चहे (हरे हरे) पायमाली—यह दुर दिन० ॥६॥
पौधे पेढ़—पुराने फल्ले दिए बाग के काट।
पत्ती पत्ती तक चुन लेता करता चमन सपाट ॥
न होते (हरे हरे) गांधी माली—यह दुर दिन० ॥७॥
"शर्म्मा जलेसरी" अधरम लखि मन में होत उचाट।
हे जगदीश देश द्रोहिन के खोलौ बेग कपाट ॥
बढे फिर (हरे हरे) खुशहाली—यह दुर दिन० ॥ ८ ॥

दादरा नं० ३

मुझे देशी चुंदरिया—मंगादो पिया ॥ टेक ॥

बारीक कपडोंमें सब अंग दीखे,
मोटी दुसूती की लादो पिया ॥१॥

लट्ठे की मलमल को चूल्हे में झोंको,
स्वदेशी लहरिया रंगादो पिया ॥ २ ॥

गर्मीपे जाडों में गर्मी में ठंडा,
ऐसा सलूका बनादो पिया ॥३॥

चटकीले-भडकीले कपडे न भावें,
अब इनमें अग्नी दिखादो पिया ॥४॥

खद्दर के बच्चों को कपडे रंगादो,
गोटा—किनारी लगादो पिया ॥ ५ ॥

लिवरपोल—लंकाशायर की,
चर्खे से हस्ती मिटादो पिया ॥६॥

"शर्म्मा" कहे इस विधि से विदेशी,
सहज ही में घरसे भगादो पिया ॥७॥

बन्नी नं० ४

बन्ना हमारा रंगीला री जरा देखो सही ॥ टेक ॥

सर पर मुकट कान में कुन्डल-झालर में मोती छबीलारी ॥ १ ॥
खद्दर का केशरिया जामा बदन में-पटुका रंगीला सजीलारी ॥२॥
देश प्रेम में गद गद हृदय-शील सुमति में सुशीलारी ॥ जरा ॥३॥
मोहनी मूर्ति सांवरी सूरत—यूरुप का मान मथीलारी ॥ ४॥
बना रहे यह "बना" हमारा-"शर्म्मा" का प्यारा, हठीलारी ॥५॥

बरना नं० ५

बरनी को देशी चुंदरिया जी-तुम लाना जरूर ॥टेक॥
देशी दुपट्टा देशी उढनियां-देशी की लाना घंगरिया जी ॥१॥
गोटा-किनारी की झालर लगाना-अच्छा रंगाना लहरिया जी ॥२॥
जो कोई पहिने बिलायत के कपडे-है वह तो बिलकुल गंवरियाजी।३।
घर २ में प्रचार हो जब स्वदेशी-सम्पति की बर्षे बदरिया जी ॥४॥
लिवरपौल-लंकाशायर के-जर जर के होंगे जिबरिया जी ॥५॥
फिर झगुली झगुले को झाड भागें-विदेशों के (बन्दर बंदरियां)जी।६
"शर्म्मा जलेसरी" पहिनाते-हंस हंस के प्रेम मुंदरिया जी ॥७॥

———:o:———

गारी जौनार नं० ६

इन गोरन की करतूत-सुनाऊं तोइ-हरे-हरे-सुन सजनी ॥टेक॥
भारत में यह जिस दम आये खूब दिखाया प्यार।
पात पात कर फिर सब लूटा दई भीतरी मार॥
टूट गई (हरे हरे) कनी कनी—इन गोरन की करतूत ॥१॥
पहिले एक कम्पनी खोली वहुत मचाई धूम।
कोली और जुलाहे यहां के फांस लिए मासूम॥
पछाडे (हरे हरे) सेठ धनी—इन गोरन की करतूत ॥२॥
अच्छे अच्छे कपडे यहां पर जो होते तैय्यार।
उसे कम्पनी जबरन लेती अरु करती बेजार॥
घरों में (हरे हरे) दे अगिनी—इन गोरन की करतूत ॥३॥
फांसें नाखूनों में ठोंकीं बांध लगाई मार।
उंगली काट अलग करते थे नित नये अत्याचार॥
करी अति (हरे हरे) कटा छनी-इन गोरन कीकरतूत ॥४॥
करघे—चर्खे तोड ताड कर किया हिन्द बेकार।
भारत में यों विधि फैलाया यूरुप का व्यौपार॥

बिगाड़ी सब (हरे हरे) बात बनी। इन गोरन की करतूत ॥५॥
अबलाओं के अंग दीखते वस्त्र पहिन बारीक।
माला माल विलायत होगई भारत मांगे भीक॥
सकल सम्पति छीनी (हरे हरे) इन गोरन की करतूत ॥६॥
वस्त्र विदेशी अब मत पहिनों रखो देश की लाज।
त्यागो-फेंको-आग लगादो तब ही होय स्वराज ॥
सुनो भारत भगनी (हरे २) इन गोरन की करतूत ॥७॥
अब नहीं पहिनो वस्त्र विदेशी खाओ सब सौगन्द।
"शर्म्मा जलेसरी" भारत में घर घर हो आनन्द॥
फलो फूलो रमनी (हरे २) इन गोरन की करतूत ॥८॥

———:o:———

दादरा नं० ७

डूबा जाता है भारत-बचालो ज़रा ॥ टेक॥
छूओं-मंगाओ न लाओ बिदेशी,
घर से भी बाहर निकालो जरा ॥ डूबा ॥१॥
विदेशों के बारीक कपडे न पहिनो,
तबीयत को अब तो संभालो जरा ॥डूबा ॥२॥
स्वदेशी हो मजबूत घर को बना हो,
खरीदो तो देखो दिखालो जरा ॥३॥
जो भूल से पहिनती हों बिदेशी,
अब उन को चल कर मनालो जरा ॥ डूबा ॥४॥
भैय्या-भतीजे जो देवें चिदेशी,
तो उस को फैंको उछालो जरा ॥ डूबा जाता है ॥५॥
"शर्म्मा जलेसरी" भारत से,
हितकर के यश को कमालो जरा ॥ डूबा ॥६॥

———:o:———

जोनार नं० ८

क्या खूब बनी जौनार—जेम लेउ (हरे हरे) सब सजना ॥ टेक ॥
डाट डपट के पत्तल परसें "दौनन" में फटकार ।
आँख दिखाय देत "अवखारे" घुडकी में "जलधार" ॥
बिठाय -हरे-हरे-आगने अंगना—क्या खूब बनी ॥ १ ॥
गाली और गलोज की "पूरीं" लाकर रखीं अगार ।
बड बडाय कर दई "बेडई" मुंह को लिओ बिगार ॥
बैठगए -- हरे-हरे-- दे धरना—क्या खूब बनी ॥ २ ॥
दिया एक सौ चौवालीस १४४ में "बूरा" "दही" अपार ।
दफे सत्तरह एक अरु दो की "रबडी" लच्छे दार ॥
मने न -हरे-हरे- कोई करना—क्या खूब बनी ॥ ३ ॥
लड्डू—खुर्मा और इमर्ती—बर्फी खुशबूदार ।
दफे एकसो तिरपन देती "चन्द्रकला" की मार ॥
खाय कर-हरे हरे- मत बकना—क्या खूब बनी० ॥ ४ ॥
हैं एकसौ चौवीस भांति के "साग" जायकेदार ।
और एकसौ सात तरह के परसें जात "अचार" ॥
आप सब -हरे हरे- को चखना—क्या खूब बनी ॥ ५ ॥
"मोंहन भोग" मारशल्ला का हमको दिया पुकार ।
बैंत "चट पटे" खूब खिलाये "अमरतसर" बाजार ॥
पडे -हरे हरे- औंधे रहना—क्या खूब बनी ॥ ६ ॥
सोटे देदे "सोंठ" चटाई "टिकिया" सेव और दार ।
पपडा गए होट पानी बिन "पापड" करत बहार ।
कहैं-हरे हरे- कहें अबना थबना—क्या खूब बनी ॥ ७ ॥
"दही पकौडी" बन्दूकों की "गोली" करी तयार ।
अरु "ओले के लड्डू" गोले दिए वस्व के डार ॥
प्यायो-हरे-हरे-शीतल झरना—क्या खूब बनी ॥ ८ ॥

ठोकर मार "मुरब्बे" हम को परसे गए संभार।
दमन नीति की "चटनी" देके मोहि लिया संसार॥
चाट रहे -हरे-हरे-सब दोना—क्या खूब बनी० ॥९॥
आखिरकार एक सौ दस में "पेठे" का ले थार॥
नौकरशाही "घालूशाही" सब कूं देत निहार॥
करो भोजन-हरे-हरे-भजना—क्या खूब बनी॥ १०॥
प्रेम प्रीति से परस रहे हैं हंस हंस नातेदार।
देश भक्त आनंद चित्त हो करते हैं स्वीकार॥
लगी-हरे हरे-लगी भगवत रटना—क्या खूब बनी॥११
बैर भाव मत कोई रखना भारत के नर नारि।
"शर्म्मा जलेसरी" ने गाई प्रीति भरी ज्यौनार॥
प्रेमसे-हरे हरे-प्रेमसे मत हटना—क्या खूब बनी॥१२॥

—————०—————

प्यारा चर्खा नं० १

चर्खा लादे प्रीतम प्यारे तेरे जाऊं मैं बलिहार॥टेक॥
घडी दो घडी रुई मंगादे-अच्छी सी उसको धुनवादे।
कूडा करकट किरी चुनादे-निकले बांका तार॥ चर्खा० ॥ १॥
सूत कातकर वस्त्र बनाऊं-चादर-कुर्ता-कोट सिलाऊं।
मैं पहनूं तुमको पहनाऊं-हो स्वदेश उपकार॥ चर्खा० ॥ २॥
मानचेष्टर-लंकाशायर-चीख उठें जापानी ताजिर।
सहन सकें चर्खे का फायर-करें पट्ट बाजार॥ चर्खा० ॥ ३॥
चिकन और तनजेब डोरिया-मलमल खासा और बोरिया।
भारत के गर बुनें कोरिया-हंसहंस करूं सिंगार॥ चर्खा०॥४॥
चर्खा चक्र सुदर्शन आला-करे दुशमनों को तहो बाला।
जल्द निकालेगा देवाला—सत्य कहूं भरतार॥ चर्खा० ॥ ५॥
भारत का येही जीवन है—तन मन धन इसपर अर्पन है।

भारत की यह मशीन गन है--करे वार पर वार ॥ चर्खा० ॥६॥
तोप चले ये गोला गोली--गोलंदाज जुलाहे कोली।
लंदन सब करदेंगे पोली--बड़ी विकट है मार ॥ चर्खा० ॥७॥
चर्खा सब आलस को खोवे--बदनामी के धब्बे धोवे।
"शर्मा अलेसरी" अब होवे--भारत का उद्धार ॥ चर्खा० ॥८॥

पद नं० १०

धनि धनि भारत भूमि हमारी ॥ टेक ॥
प्रगट भये तेरी कुक्षासों बडे २ बलधारी ॥ धनि० ॥
अम्मरीष, बलि, बेन, ययाती, शिवि दधीचि नृप भारी।
प्राण दिये पै प्रण नहीं त्यागो जाने यह महि सारी ॥धनि०॥
हरिश्चन्द्र, अज, रघु, दलीप से जन्मे सुत महतारी।
निज शरीर तक दान कियौ जिन याचक किये सुखारी ॥धनि०
राम, भरत, अरु लखन शत्रुघन दशरथ सुत शुभकारी।
भ्रात भक्ति की अनुपम मूरति फूट कुमति ही ने डारी ॥ धनि०॥
भे अजात रिपु धर्म युधिष्ठिर भीष्म से ब्रह्मचारी।
कर्ण, भीम, सहदेव, नकुल औ अरजुन शस्त्र खिलारी ॥धनि०॥
देवकी नन्दन कंस निकन्दन बृज पति कृष्ण मुरारी।
नन्द नदन जसुदा के छैया कान्हा गौ हितकारी ॥धनि०॥५॥
जने सपूत प्रथम ये मैया अब कहीं शक्ति बिसारी।
बिनवै 'इन्द्र' मात पुनि प्रसबहु राज काज अधिकारी ॥धनि०॥

भजन नं० ११

तजोरे मन अन्यायिन कौ संग ॥ टेक ॥
असहयोग को अर्थ यही है यही आत्मिक जंग ॥

हेल मेल की चटनी चाटो। नाक छिनारि फूट की काटौ॥
वैर विरोध असुर की हाटौ। फिर घर प्रेम प्रीति को पाटौ॥
मित्रो रहै नहीं कुछ घाटौ। ठीक करो सब ढंग ॥ तजो ॥१॥
कोट पेन्ट पतलून उतारो। तन पै वस्त्र स्वदेशी धारौ॥
पुरुषारथी बनो पे प्यारो! आलस पापी को दै मारौ॥
काहू को मत तको सहारौ। बढती रहै उमंग ॥ तजो०॥२॥
सहन शक्ति का कोट बनाओ। धीरज की तोपें धरवाओ।
फिर बारूद क्षमा की लाओ। शांती के गोले भरवाओ।
देशभक्ति की अग्नि लगाओ। करदो सबको दंग ॥तजो०३॥
बांण मधुर भाषण का प्यारा। नीति सिरोही लेहु दुधारा।
बजे अहिंसा का नक्कारा। हल्ला करो वीर इक बारा॥
भगे शत्रुओं का दळ सारा। करो मान सब भंग॥तजो०४॥
भारत की जय बोले आओ। प्यारो पग पीछे न हटाओ॥
यह रण क्षेत्र विजय कर लाओ। फिर सुख लहो दुःख नहिं पाओ
बैठे घर में मौज उडाओ। बहे चैन की गंग ॥तजो०॥
बढो सामने विजय खडी है। भागी रिपु दल मांहि पडी है॥
मर मिटने की यही घडी है। एक दाव पर गोट अडी है॥
"इंद्र" मात को आश बडी है। हो न जाय चित भंग ॥तजो०॥

गजल गुरू का बाग नं० १२

गुरू का बाग कट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब।
ज़खमीयों से पट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब॥
सरदार जो "अकाली" थे आलिम दिमाग़ आली थे।
"महंत" उन का नट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब॥
पीटे गए थे बारहा— पकड़े गए हज़ार हा।
जेल ख़ाना अट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब॥

टांग गई किसी की टूट—आँख गई किसी की फूट।
दिल किसी का फट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
जूडे पकड़ घसीट कर—फेंका गया था पीट कर।
झाला दिया उलटा गया हाय ग़ज़ब सितब ग़ज़ब ॥
मारें पड़ीं थीं इस क़दर—गिर कर हुए थे बेख़बर।
दम मोटरों में घुट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
ऐसे दिए गए हैं दाग़—होगए घर बे चिराग।
ज़ालिम बुरा चिमट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
तोडे सितम बे इंतहा—पुलिस ने की थी वह जफ़ा।
देखा न जाता हट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
सत श्री अकाल कह—वाह गुरू विशाल कह।
जत्था खुशी से डट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
सत्याग्रह को पालते—उफ़ तक न वह निकालते।
चाहे शीश धड से जाय कट हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
सरकार अरू महंत का—किस्सा यही है अंत का।
कुछ मुआमला था गठ गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
यूरुप पै जब पडी बिथा—सिक्खों ने की सहायता।
इनआम उस का बट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥
"शर्म्मा अलेसरी" ख़मोश—क्यों दिला रहा है जोश।
दिल मेरा उचट गया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥

गजल चर्खा १३

स्वराज्य तो हम को दिलाएगा चर्खा।
खिलाफ़त का झगडा मिटाएगा चर्खा ॥
यह घूं घूं की धुर्पद सुनाएगा चर्खा।
मेरे होसले अब बढाएगा चर्खा ॥

अगर हिन्द अपना चलाएगा चर्खा।
तो दुश्मन का चर्खा बनाएगा चर्खा॥
अगर कोई दिल से भुलाएगा चर्खा।
तो नीचा उसी को दिखाएगा चर्खा॥
विदेशी को यहां से भगाएगा चर्खा।
स्वदेशी का डंका बजाएगा चर्खा॥
सदा मेल के गीत गाएगा चर्खा।
अदू के जिगर को जलाएगा चर्खा॥
नहूसत से पीछा छुडाएगा चर्खा।
हमें चैन से अब बिठाएगा चर्खा॥
हमें खीर हलवा खिलाएगा चर्खा।
हमें दूध शीरीं पिलाएगा चर्खा॥
विदेशी तिजारत को खाएगा चर्खा।
स्वदेशी की जडको जमाएगा चर्खा॥
जो "शर्म्मा" भी अपना घुमाएगा चर्खा।
तो दुशमन को चक्कर में लाएगा चर्खा॥

———:o:———

(श्रीमान मु० बाबूराम जी बर्म्मा मंत्री ज़िला कांग्रेस कमेटी "एटा" की तारीफ़ में)

—: रुबाई :— नं०१४

कोई हक़ जू किस तरह झेले किसी की सख़्तियां॥
जब कि है सारे ज़माने भर पै क़ाबू राम का॥
राम ही के नाम पर जब कर चुके आराम तर्क।
क्यों न फिर दुनियां में होवे नाम "बाबूराम" का॥

———:o:———

लावनी रंगत खडी नं० १५

अहिंस आतमिक असहयोग कर दुनियाँ को दिखला देंगे॥
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गवाँ देंगे॥ टेक॥
नम्र भाव से शत्रु हृदय पर अपनी धाक जमा देंगे।
वर्धमान भारत माता का सब अपमान मिटा देंगे॥
स्वतंत्रता देवी के कारण हम सर्वस्व लुटा देंगे।
बुज़दिल अरु ख़ुद ग़र्ज़-निकम्मे हों सो दांत दिखा देंगे॥
डायर! ने जो लिखी डायरी उस को खोल सुना देंगे।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे॥ १॥
अमरतसर जलियान बाग का कैसे दृश्य भुला देंगे।
दाग खिलाफ़त का जो दिलपर क्यों कर उसे मिटा देंगे॥
क्या मुस्लिम हम मुक़द्दिसा की बेहुर्मती करा देंगे।
झन्डा उठा ख़िलाफ़त का इज्जत इसलाम बढ़ा देंगे॥
मुसलमान कहला कर क्या जीते जी नाक कटा देंगे।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे॥
करें बात अन्याय युक्त बस उन को भीक झिखा देंगे।
कूट नीति का भंडा फोरें आखिर नाच नचा देंगे॥
आज हंसे जो अपने ऊपर आखिर उन्हें रुला देंगे।
उलझन में जो हमें डालते उनको भी उलझा देंगे॥
लगा चुके गुरगांठ अधर्मी उस को हम सुलझा देंगे।
स्वतंत्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे॥३॥
दीन - हीन गमगीन-भारती नाक चने बिनवा देंगे।
मारेंगे हम नहीं तुम्हें पर अपने प्राण नशा देंगे॥
सब्रो सकूं की करामात इक रोज तुम्हें दिखला देंगे।
भर २ ठन्डी स्वास सदन तेरे में आग लगा देंगे॥
"शर्म्मा डालेसरी" झंडे को हो आजाद घुमा देंगे।

स्वतन्त्रता के पद पंकज पर हम प्रिय प्राण गंवा देंगे ॥

——:o:——

गुरू का बाग नं० १६

अब गुरू के बाग का घर घर में चर्चा होगया।
ज़ुल्म "बीटी" "डायरे" सानी का शुहरा होगया ॥
बेतरह बेदर्द होकर ज़ुल्म तोडे बाग में।
सर पै सरदारों के जल्लादों का डंडा होगया ॥
पीटे घसीटे भी गए रूंधे गए खूंदे गए।
खून से गो तरबतर सर और चहरा होगया ॥
"रक्तसर" अफ़सोस "अमरतसर" किया जल्लाद ने।
था चमन गुलजार लेकिन आज सहरा होगया ॥
बीरता ! अरु धीरता !! गम्भीरता !!! दिखला चुके।
"शान्ती" को देख सत्र के दर्द पैदा होगया ॥
नाम है जिनका "अकाली" काल से डरते नहीं।
दुशमनों के दिल पै अब, "सिक्खों" का सिक्का होगया ॥
बेवफाई से भरी सरकार की हम दर्दियां।
वह समझले सल्तनत का मेरी तडका होगया ॥
अब छिपाए से छिपैगा किस तरह "शर्म्मा,, बता।
हिन्द की सरकार का अब राज इफ़शा होगया ॥

——:o:——

कव्वाली नं० १७

भारत सुतत्र होवे चाहे प्राण तन से निकलें।
जोशे वतन न कम हो चाहे वतन से निकलें ॥
जेलों में डालदें वह फांसी पै या चढादें।
सच्चे सखुन व लेकिन तबभी दहन से निकलें ॥

होकर जिला वतन भी जाते हैं इस लिए हम।
आजाद देश करलें तब अन्डमन से निकलें॥
अपना चमन तो उस दम फूलेगा और फलेगा।
बेकारी फूट आलस जिस दम चमन से निकलें॥
क्यों देर कर रहे हैं कहदो विदेशियों से।
यूरुप को अब सिधारें जल्दी वतन से निकलें॥
जय बोलते हुए हम गाते हैं गीत मुल्की।
झन्डे स्वतंत्रता के लेकर अमन से निकलें॥
बादल नहूसतों के हट जायेंगे किसी दिन।
प्रकाश हो जगत में जब हम गहन से निकलें॥
हो पैरहन स्वदेशी मन और बचन स्वदेशी।
मरते समय भी "शर्मा" देशी कफन से निकलें॥

विज्ञापन ।

विदित हो कि निम्न लिखित पुस्तकें हमारे पुस्तकालय में नई छप कर तैयार हुई हैं। यह बहुत ही सरल और हास्य पूर्वक अति उपयोगी और सस्ती हैं। इकट्ठी मंगाने वालों को बड़ा लाभ होता है। १) रुपया से कम का वी० पी० नहीं भेजा जाता।

राजसिंह चंचल कुमारी	१)	जेल की चाट	)॥
सत्यवती	१)	गर्दभ महासभा	)॥
गांधी की आंधी	-)॥	शावर गंभश	)॥
शाने हिन्द (उर्दू)	-)	स्वदेश मंगलाचार	-)
अंग्रेजों का गिल्ली डंडा	)॥	मटिया सनीचर	)॥
,, की डुग डुगी	)॥	कालूराम में कालिमा	)॥
,, की पोलसी	)॥	पौं० का फोटू	)॥
स्वराज्य रसिया	)॥	पौं० की गोलम गोल	)॥
असहयोग रसिया	)॥	राम रसायन	)॥
अबला बिलाप	)॥	चुंगी का मैम्बर	(छपैगा)

मिलने का पताः—

रामस्वरूप शर्म्मा बुकसेलर

मुकाम जलेसर—जिला एटा, यू०पी०.